6 कालिदास का प्राणीप्रेम

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई., निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म पंजाब के अमृतसर में हुआ था । इनका असली नाम तो मदन मोहन गुगलानी था । उनकी दीदी ने मदन मोहन राकेश नाम रखा था । बाद में मोहन राकेश नाम स्थायी हुआ । मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के अच्छे नाट्यकार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपना नाम अमर कर गये हैं । इन्होंने डायरी, संस्मरण, जीवनी, निबंध, पत्रकारिता तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी ठोस योगदान दिया है । नाटक में 'आषाढ़ का एक दिन' बहुत ही विख्यात और चर्चित नाटक रहा है ।

नाटक : 'आधे अधूरे', 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ़ का एक दिन', **एकांकी :** 'अंडे के छिलके', 'बीज नाटक', 'आईने के सामने' एवं 'सारा आकाश', 'आखरी चट्टान तक' उनकी गद्य रचनाएँ हैं ।

यहाँ पर 'आषाढ़ का एक दिन' से केवल एक अंश ही 'कालिदास का प्राणी प्रेम' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है । नाटक के दो प्रमुख पात्र हैं, मल्लिका और कालिदास । कालिदास बाण से घायल हरिणशावक को बचा लेता है । नाट्यकार ने यह कहना चाहा है कि अगर हम प्राण दे नहीं सकते तो किसी का प्राण लेने का अधिकार भी हमें नहीं है । 'मारने वाले से बचानेवाला महान है ।' वस्तुत: दन्तुल ने शिशु हरिणशावक को घायल कर दिया है इसीलिए इस प्रकार का व्यंग-बाण लेखक उस पर ही चलाते हैं । अत: यहाँ पर जीवदया की बात बताकर कालिदास का प्राणीप्रेम प्रकट किया है । पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं । अत: उनका हनन नहीं होना चाहिए ।

पर्यावरण की रक्षा के लिए पशु-पक्षियों का अनन्य महत्त्व है । मानव जीवन विकास में प्राणियों का बड़ा योगदान है । प्राणी मानव के साथी हैं इसीलिए हमें उनका रक्षण करना चाहिए ।

(कालिदास एक हरिणशावक को बाँहों मे लिये पुचकारता हुआ आता है । हरिणशावक के शरीर से लहू टपक रहा है ।)

कालिदास : हम जिएँगे हरिणशावक ! जिएँगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे । हमारा शरीर कोमल है तो क्या हुआ ? हम पीड़ा सह सकते हैं । एक बाण प्राण ले सकता है तो उँगलियों का कोमल स्पर्श प्राण दे भी सकता है । हमें नये प्राण मिल जाएँगे । हम कोमल आस्तरण पर विश्राम करेंगे । हमारे अंगों पर घृत का लेप होगा । कल हम फिर वनस्थली में घूमेंगे । कोमल दूर्वा खाएँगे न ? खाएँगे न ?

(मल्लिका अपने को सहेजकर द्वार की ओर जाती है ।)

मल्लिका : यह आहत हरिणशावक ?... यहाँ ऐसा कौन व्यक्ति है जिसने इसे आहत किया ? क्या दक्षिण की तरह यहाँ भी... ?

कालिदास : आज गाँव-प्रदेश में कई नयी आकृतियाँ देख रहा हूँ ।

(झरोखे के पास जाकर आसन पर बैठ जाता है ।)

राज्य के कुछ कर्मचारी आये हैं ।

(हरिणशावक को वक्ष से सटाकर थपथपाने लगता है ।)

हम सोएँगे ? हाँ, हम थोड़ी देर सो लेंगे तो हमारी पीड़ा दूर हो जाएगी । परंतु उससे पहले हमें थोड़ा दूध पी लेना है । मल्लिका थोड़ा दूध हो तो किसी भाजन में ले आओ ।

मल्लिका : माँ ने दूध औटाकर रखा है । देखती हूँ ।

(चूल्हे के निकट रखे बरतनों के पास जाकर देखने लगती है ।)

अभी-अभी दो-तीन राज कर्मचारियों को हमने घोड़े पर जाते देखा है । माँ कहती है कि जब भी ये लोग आते हैं, कोई न कोई अनिष्ट होता है । वर्षा के रोमांच के बाद मुझे यह सब बहुत विचित्र लगा ।

(दूध का बरतन उठाकर दूध खुले बरतन में उड़ेलने लगती है ।)

माँ आज बहुत रुष्ट है ।

(कालिदास हरिणशावक को बाँहों से झुलाने लगता है ।)

कालिदास : हम पहले से सुखी हैं । हमारी पीड़ा धीरे-धीरे दूर हो रही है । हम स्वस्थ हो रहे हैं । न जाने इसके रूई जैसे कोमल शरीर पर उससे बाण छोड़ते बना कैसे ? वह कुलांच भरता मेरी गोदी में आ गया । मैंने कहा, तुझे वहाँ ले चलता हूँ जहाँ तुझे अपनी माँ की-सी आँखें और उसका-सा ही स्नेह मिलेगा ।
(मल्लिका की ओर देखता है । मल्लिका दूध लिए पास आ जाती है ।)

मल्लिका : सच, माँ आज बहुत रुष्ट हैं । माँ को अनुमान हो गया कि वर्षा में मैं तुम्हारे साथ थी, नहीं तो इस तरह भीगकर न आती । माँ को अपवाद की बहुत चिंता रहती है ।

कालिदास : दूध मुझे दे दो और इसे बाँहों में ले लो ।
(दूध का भाजन उसके हाथ से ले लेता है । मल्लिका हरिणशावक को बाँहों में लेकर उसका मुँह दूध के निकट ले जाती है । कालिदास भाजन को उसके और निकट कर देता है ।) हम दूध नहीं पीएँगे ? नहीं हम ऐसा हठ नहीं करेंगे । हम दूध अवश्य पीएँगे ।
(राजपुरुष दन्तुल ड्योढ़ी से आकर द्वार के पास रुक जाता है । क्षणभर वह उन्हें देखता रहता है । कालिदास हरिण को मुँह से दूध पिला देता है ।)
ऐसे...ऐसे ।
(दन्तुल बढ़कर उनके निकट आता है ।)

दन्तुल : दूध पिलाकर इसके कोमल मांस को और कोमल कर लेना चाहते हो ?
(कालिदास और मल्लिका चौंककर उसे देखते हैं । मल्लिका हरिणशावक को लिये थोड़ा पीछे हट जाती है । कालिदास दूध का भाजन आसन पर रख देता है ।)

कालिदास : जहाँ तक मैं जानता हूँ हम लोग परिचित नहीं हैं । तुम्हारा एक अपरिचित घर में आने का साहस कैसे हुआ ?
(दन्तुल एक बार मल्लिका की ओर देखता है फिर कालिदास की ओर ।)

दन्तुल : कैसी आकस्मिक बात है कि ऐसा ही प्रश्न मैं तुमसे पूछना चाहता था । हमारा कभी का परिचय नहीं फिर भी मेरे बाण से आहत हरिण को उठा ले आने में तुम्हें संकोच नहीं हुआ ? यह तो कहो कि द्वार तक रक्त बिन्दुओं के चिह्न बने हैं, अन्यथा इन बादलों से घिरे दिनों में मैं तुम्हारा अनुसरण कर पाता ?

कालिदास : देख रहा हूँ कि तुम इस प्रदेश के निवासी नहीं हो ।
(दन्तुल व्यंग्यात्मक हँसी हँसता है ।)

दन्तुल : मैं तुम्हारी दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ । मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ ।

कालिदास : मैं तुम्हारी वेश-भूषा को देखकर नहीं कह रहा ।

दन्तुल : तो क्या मेरे ललाट की रेखाओं को देखकर ? जान पड़ता है चोरी के अतिरिक्त सामुद्रिक का भी अभ्यास करते हो ।
(मल्लिका चोट खायी-सी कुछ आगे आती है ।)

मल्लिका : तुम्हें ऐसा लांछन लगाते लज्जा नहीं आती ?

दन्तुल : क्षमा चाहता हूँ देवि ! परंतु यह हरिणशावक, जिसे बाँहों में लिये हैं, मेरे बाण से आहत हुआ है । इसलिए यह मेरी संपत्ति है । मेरी संपत्ति मुझे लौटा तो देंगी ?

कालिदास : इस प्रदेश में हरिणों का आखेट नहीं होता राजपुरुष । तुम बाहर से आये हो, इसलिए इतना ही पर्याप्त है कि हम इसके लिए तुम्हें अपराधी न मानें ।

दन्तुल : तो राजपुरुष के अपराध का निर्णय गाँववासी करेंगे । ग्रामीण युवक, अपराध और न्याय का शब्दार्थ भी जानते हो ।

कालिदास : शब्द और अर्थ राजपुरुषों की संपत्ति है, जानकर आश्चर्य हुआ ।

दन्तुल : समझदार व्यक्ति जान पड़ते हो । फिर भी नहीं जानते कि राजपुरुषों के अधिकार बहुत दूर तक आते हैं । मुझे देर हो रही है । यह हरिणशावक मुझे दे दो ।

कालिदास : यह हरिणशावक इस पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राज-पुरुष ! और इसी पार्वत्य भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं । तुम यह सोचकर भूलकर रहे हो कि हम इसे तुम्हारे हाथ में सौंप देंगे । मल्लिका, इसे अंदर ले जाकर तल्प पर या किसी आस्तरण पर...(अम्बिका सहसा अंदर से आती है ।)

अम्बिका : इस घर के तल्प और आस्तरण हरिणशावकों के लिए नहीं है ।

मल्लिका : तुम देख रही हो माँ...!

अम्बिका : हाँ, देख रही हूँ । इसलिए तो कह रही हूँ । तल्प और आस्तरण मनुष्यों के सोने के लिए हैं, पशुओं के लिए नहीं ।

कालिदास : इसे मुझे दे दो, मल्लिका !

(दूध का भाजन नीचे रख देता है और बढ़कर हरिणशावक को अपनी बाँहों में ले लेता है ।) इसके लिए मेरी बाँहों का आस्तरण ही पर्याप्त होगा । मैं इसे घर ले जाऊँगा । (द्वार की ओर चल देता है ।)

दन्तुल : और राजपुरुष दन्तुल तुम्हें ले जाते देखता रहेगा ।

कालिदास : यह राजपुरुष की रुचि पर निर्भर करता है ।

(बिना उसकी ओर देखे ड्योढ़ी में चला जाता है ।)

दन्तुल : राजपुरुष की रुचि-अरुचि क्या होती है, संभवतः इसका परिचय तुम्हें देना आवश्यक होगा ।

(कालिदास बाहर चला जाता है । केवल उसका शब्द ही सुनाई देता है ।)

कालिदास : संभवतः ।

दन्तुल : संभवतः ?

(तलवार की मूठ पर हाथ रखे उसके पीछे जाना चाहता है । मल्लिका शीघ्रता से द्वार के सामने खड़ी हो जाती है ।)

मल्लिका : ठहरो राजपुरुष ! हरिणशावक के लिए हठ मत करो । तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का । कालिदास निःशस्त्र होते हुए भी तुम्हारे शस्त्र की चिंता नहीं करेंगे ।

दन्तुल : कालिदास ? तुम्हारा अर्थ है कि मैं जिनसे हरिणशावक के लिए तर्क कर रहा था वे कवि कालिदास हैं ?

मल्लिका : हाँ-हाँ । परंतु तुम यह कैसे जानते हो कि कालिदास कवि हैं ?

दन्तुल : कैसे जानता हूँ ! उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति 'ऋतुसंहार' के लेखक कवि कालिदास को जानता है ।

मल्लिका : उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें जानता है ?

दन्तुल : सम्राट ने स्वयं ऋतुसंहार पढ़ा और उसकी प्रशंसा की है । इसलिए आज उज्जयिनी का राज्य 'ऋतुसंहार' के लेखक का सम्मान करना और उन्हें राजकवि का सम्मान देना चाहता है । आचार्य वररुचि इसी उद्देश्य से उज्जयिनी से यहाँ आए हैं ।

(मल्लिका सुनकर स्तम्भित-सी हो रहती है ।)

मल्लिका : उज्जयिनी का राज्य उन्हें सम्मान देना चाहता है ? राजकवि का आसन....?

दन्तुल : मुझे खेद है मैंने उनके साथ अशिष्टता का व्यवहार किया । मुझे जाकर उनसे क्षमा माँगनी चाहिए ।

शब्दार्थ

हरिणशावक हिरण का बच्चा, मृगछौना **आस्तरण** बिछौना, गद्दा **कुलांच** चौकड़ी भरना **घृतः** घी **भाजन** पात्र, बरतन **अनुसरण** पीछे-पीछे चलना **सामुद्रिक** हस्तरेखा विद्या, ज्योतिष **आखेट** शिकार **पार्वत्य** पर्वतीय **अपवाद** निंदा **व्यथित** दुःखी **तल्प** शय्या, अटारी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) हरिणशावक इनमें से किसके बाणों से घायल हुआ था ?

(अ) कालिदास (ब) मल्लिका (क) दन्तुल (ड) अम्बिका

(2) कालिदास हरिणशावक के अंगों पर ..... का लेप लगाना चाहता है ।

(अ) हवाई (ब) तेल (क) मरहम (ड) घृत

(3) 'मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ ।' - यह वाक्य कौन किस से कहता है ?

(अ) कालिदास दन्तुल से (ब) दन्तुल कालिदास से (क) मल्लिका दन्तुल से (ड) दन्तुल मल्लिका से

(4) उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति कालिदास को किसलिए जानता है ?

(अ) 'ऋतुसंहार' के लिए (ब) 'गीतसंहार' के लिए

(क) 'संगीतसंहार' के लिए (ड) 'नाट्यसंहार' के लिए

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कालिदास कौन थे ?

(2) हिरणशावक किसके बाणों से घायल हुआ था ?

(3) कालिदास हिरण को कहाँ ले गये ?

(4) अंत में दन्तुल ने कालिदास को कैसे पहचाना ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) माँ के रुष्ट होने के पीछे मल्लिका क्या अनुमान करती है ?

(2) दन्तुल कौन था ? वह मल्लिका के घर कैसे पहुँचा ?

(3) मल्लिका ने दन्तुल को हरिणशावक के लिए हठ न करने के लिए क्यों कहा ?

(4) कालिदास दन्तुल को अपराधी न मानने के लिए क्या तर्क देता है ?

(5) उज्जयिनी की राजसभा कवि कालिदास का सम्मान किस तरह करना चाहती है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) घायल हरिणशावक को बचाने के लिए कालिदास ने क्या-क्या किया ?

(2) कालिदास हरिणशावक को क्यों बचाना चाहते थे ?

(3) हरिणशावक के लिए कालिदास और दन्तुल के बीच में हुए संवाद को अपने शब्दों में लिखिए ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का।

(2) यह हरिणशावक पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राजपुरुष और इसी पार्वत्य-भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं ।

6. शब्द का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आस्तरण, रुष्ट, दूर्वा, आखेट

7. विशेषण बनाइए :

शरीर, गाँव, प्रदेश, दिन, पीड़ा

8. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

कोमल, बहुत, रुष्ट

9. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

लहू, हरिण, ऋतु, दूध

10. सविग्रह समास भेद बताइए :

अनुसरण, हिरण शावक, प्रतिदिन, नि:शस्त्र

योग्यता विस्तार

- 'जीवदया' पर निबंध लिखिए ।
- इस नाट्यांश का वर्गखंड में मंचन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कालिदास के नाटकों में से किसी एक नाटक की जानकारी विद्यार्थियों को दें ।